भजन

तर्ज–तू प्यार का सागर है

पिया मेहर के सागर है,बस मेहर ही करते है
हम चाहें बदल जायें,कभी वो ना बदलते है

1–संसार मे आकर के,हम भूल गये उनको
मुहं फेर के बैठे है,हम पीठ दिये जिनको
वह कौन कहां के है,आये क्यों जहां में है

2–हम भूले भटको को ,सही राह पे लाते है
घर छोड़ के दर दर की,हाय ठोकरें खाते है
इलजाम सहे लेकिन,पीछे नही हटते है

3–हम सब अंगना उनकी,वह धाम धनी हमरे
गुण कैसे गाऊं मैं ,बलिहार पिया तुमरे
नासमझ हूं माफ करो,चरणों के सहारे है